**ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA**
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 121-123**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

# मुसहर समुदाय : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
## (मऊ जनपद के रतनपुरा विकासखण्ड के संदर्भ में)

**1. डॉ0 राकेश प्रताप शाही**
**2. सोनी सिंह**

1. आचार्य, समाजशास्त्र विभाग 2. शोध अध्येत्री, समाजशास्त्र विभाग, श्री भगवान महावीर पी0जी0 कालेज, पावानगर (फाजिलनगर), कुशीनगर (उ0प्र0) भारत

**Received-02.10.2024, Revised-10.10.2024, Accepted-15.10.2024** **E-mail : soni0092singh@gmail.com**

***सारांशः भारत में एक अत्यन्त विशिष्ट प्रकार के सामाजिक सामूहिकरण पाया जाता है, वह जाति समूह है। यदि भारतीय समाज का अध्ययन सामाजिक सामूहिकरण की इस विविधता की गहराई तथा सतर्कता से अध्ययन नहीं किया गया तो वह उसे समाज के मूल तत्व को ही खो देंगे। भारतीय समाज में विभिन्न प्रकार की जाति पाई जाती है उन्ही में से एक जाति है 'मुसहर जाति'। मुसहर जाति की उत्पत्ति कहां और किस युग में हुई और उनकी स्थिति क्या रही है? इस प्रश्न का कोई एक निश्चित उत्तर नहीं है। इस बारे में भिन्न भिन्न मत है, मुसहर जाति दलित समुदाय के अंतर्गत आने वाली जाति है, और जाति जन्म से जुड़ी होती है जिसे व्यक्ति स्वतः ही जन्म से प्राप्त करता है। मुसहर उत्तरी भारत के निचले गंगा के मैदान और तराई इलाकों में निवास करने वाली एक जाति है तथा इनके नाम का शाब्दिक अर्थ 'चूहा खाने/पकड़ने वाला' है। यह जाति समाज का सर्वाधिक शोषित, वंचित, निर्धन एवं अशिक्षित समुदाय है। इसकी साक्षरता बहुत कम है। ये लोग आज भी जंगल तथा किसी गांव के किनारे बसे हुए है, वनों में निवास करने के कारण इन्हें वनों का राजा/रानी, बनमानुष तथा अन्य नामों से जाने जाते हैं।***

***कुंजीभूत शब्द– शोषित, वंचित, अशिक्षित, कमजोर वर्ग, दलित समुदाय, मुसहर जाति, अशिक्षित, मूल तत्व, विविधता***

**अध्ययन का उद्देश्य–** प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों को हम निम्न बिंदुओं में देख सकते हैं :

- मुसहर जाति की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति की यथार्थता का अध्ययन
- मुसहर समुदाय के धार्मिक विश्वासों एवं कृत्यों का पता लगाना
- स्वतंत्रता के बाद सामुदायिक विकास योजना पंचायती राज द्वारा ग्रामीण, पारिवारिक परिवर्तन में गतिशीलता उत्पन्न हुई है।

**उपकल्पना–** प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के कुछ उपकल्पनाओं का निर्माण करना आवश्यक है ताकि अध्ययन को सही दिशा मिल सके। ये उपकल्पनाएं निम्न प्रकार की है–मुसहर जातियों की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति निम्न प्रकार की है– गैर जाति लोगों का उनके क्षेत्रों में हस्तक्षेप के पहले मुसहर जातियां आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर थीं, जब इनका बाहरी लोगों से संपर्क हुआ तो वह इनका भरपूर लाभ उठाये।

मुसहर जातियों में भूमि अपवर्तन जनित आर्थिक वंचना इन बाहरी लोगों के शोषण का परिणाम है। मुसहर जातियों के आर्थिक वंचन ने सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन के विविध क्षेत्रों, जीवन पद्धति विवाह, धर्म, कला, मूल्य व्यवस्था ओर भौतिक संस्कृति को बहुत अधिक मात्रा में प्रभावित किया है।

**अध्ययन क्षेत्र–** प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में रूप में उत्तर प्रदेश के मऊ जनपद के रतनपुरा विकासखंड के संदर्भ में हे।

**प्रतिदर्श–** प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के मऊ जनपद के रतनपुरा विकासखण्ड के पाँच गांव पर है। उत्तर प्रदेश में मुसहर जाति की संख्या 2,50,000 है। तथा मऊ जनपद के रतनपुरा विकासखण्ड में लगभग 2000 मुसहर जातियां निवास करती है। जिन पर शोधकर्ता का अध्ययन 200 मुसहर परिवार पर है।

**तथ्य संकलन के स्रोत–** वर्तमान अध्ययन से संबंधित तथ्यों का संकलन दो स्तरों पर किया गया है। प्राथमिक स्रोत एवं द्वितीयक स्रोत।

**प्राथमिक स्रोत–** इसमें अध्ययनकर्ता प्रदर्शित मुसहरों से संरचित साक्षात्कार अनुसूची की सहायता से व्यक्तिगत संपर्क स्थापित करके तथ्य सामगी का संकलन किया गया।

**द्वितीयक स्रोत–** प्रस्तुत अध्ययन में रतनपुरा विकासखंड के आलेखों के आधार पर उन ग्रामों का सम्यक अवबोध प्राप्त किया गया। तथा मुसहर जाति से संबंधित पुस्तकें, समाचार पत्र का भी सहारा लिया गया।

**तथ्य संकलन की प्रविधि–** प्रस्तुत अध्ययन में तथ्य संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया है।

**प्रस्तावना–** भारत एक विविधता वाला देश है। यहां विभिन्न जातियां, उपजातियां निवास करती है। जो भारत की सौंदर्यता को बढ़ाती है। भारत में हजारों की संख्या में जातियाँ पायी जाती है, जो व्यक्ति के कार्य परिस्थिति तथा उपलब्ध अवसरों के साथ ही साथ उनकी कठिनाइयों को भी निर्धारित करती है, इसीलिए इरावती कर्वे ने कहा है कि यदि हमें भारतीय समाज को समझना है तो जाति प्रथा का अध्ययन नितांत आवश्यक है, भारतीय समाज में दलितों की खासकर मुसहर समुदाय की स्थिति अतिदयनीय है। जो वर्तमान समाज के अनेक समस्याओं से जूझ रहा है।, कहीं इन्हें सामाजिक समस्या परेशान करती है तो कहीं आर्थिक, कहीं राजनीतिक तो कहीं संप्रदायिक। यही वजह है कि आज जीवन के हर क्षेत्र में आंदोलन करने वाली समस्या अनुसूचित जातियों की है।

भारतीय समाज में दलितों को हमेशा से उपेक्षा की दृष्टि से देखा गया है। वैदिक काल की बात करते तो वैदिक युग में वर्ण व्यवस्था का प्रचलन था। ऋग्वेद के पहले मंडल के 113 में सूक्त की 16वीं ऋचा के अंतर्गत चार वर्णों का उल्लेख मिलता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ओर शूद्र। इनमें क्रमशः ब्राह्मणों की सामाजिक स्थिति सर्वाधिक सर्वोच्च एवं शूद्रों को अत्यंत निकृष्ट स्थान प्राप्त है। शूद्र अपने से ऊपर वाले लोगों की सेवा करते थे। शूद्र को कई नामों से संबोधित करते थे। जैसे पतित. कोढ़ी, दास, चाण्डाल, अस्पृश्य तथा दलित।

सामान्य रूप से यदि कहा जाए तो जाति व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है, जो एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में निवास करता है, जो किसी एक आदि पुरुष को अपना उद्गम मानता है। जिसकी एक सामान्य संस्कृत होती है जो आज भी आधुनिक सभ्यता से परे है।

**अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

जाति जो की अंर्गेजी शब्द के कास्ट (Cast) शब्द कस्टा (Caste) से बना है, जिसका अर्थ प्रजाति जन्म या भेद होता है। जाति जन्म पर आधारित होती है, व्यक्ति ना तो जाति बदल सकता है ना ही अपनी जातियता को छोड़ सकता है। मुसहर समुदाय दलित समुदाय/अनुसूचित जाति के अंतर्गत आते हैं। ये लोग आज भी अनेक समस्याओं से जूझ रहे हैं तथा अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पाते हैं। ये लोग आज भी जंगल में निवास करते हें। इस जाति के सभी लोग भूमिहीन, शोषित तथा निर्धन है। इनका कोई स्थाई बंदोबस्त नहीं है। ये लोग अपना जैस –तैसे जीवन का निर्वहन कर रहे हैं तथा सारी सुविधाओं से वंचित है। इनके पास ना तो सड.क है, ना यह अच्छे मकान न ही शौचालय। इनका जीवन नियति अत्यंत विकट है। ये लोग अपनी जीविका चलाने के लिए मजदूरी करते हैं तथा खेतों में मजदूर के रूप में कार्य करते हैं। ये लोग आज भी अपने परंपरागत व्यवसाय (दोना पत्तल) कर रहे हैं। इनकी बस्तियों को 'मुसहर टोला' के नाम से पुकारते हैं। इनमें शिक्षा न के बराबर है। इन लोगों को मिट्टी खोदने में महारत हासिल है इसलिए इनका एक भाग कृषि में लगा है। इनका मानना है कि ये लोग गंगा घाटी की सबसे पुरानी जाति है ओर गंगा घाटी में आर्यों के प्रसार के बाद इन्हें गुलाम बना लिया गया। तब से ये लोग शोषित तथा समाज से वंचित वर्ग के रूप में माने जाते हैं।

**मुसहर जाति की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति–** व्यक्तित्व विकास व मनोवृत्तियों के निर्धारण में व्यक्ति की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति जिस सामाजिक आर्थिक स्थिति में रहता है, उसे जिस प्रकार का जीवन स्तर प्राप्त होता है ओर जिन सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्य में उसका प्रशिक्षण किया जाता है, वे उसमें उपलब्धियाँ मूल्य व आकांक्षाओं के स्तर को प्रभावित करती है। सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश की संतोषजनक स्थिति या असहाय परिस्थितियाँ उसमें जीवन लक्ष्यों व उपलब्धियों की दिशाओं को प्रभावित करती रहती है। अतेव व्यक्ति के सामाजिक–आर्थिक परिवेश का अध्ययन व्यक्ति की उपलब्धियों, आकांक्षाओं, मूल्यों व सहभागिता के स्वरूप के अध्ययन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

परिवर्तन व गतिशीलता के अध्ययन में सामाजिक आर्थिक कारकों का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है। व्यक्ति के परंपरागत सामाजिक आर्थिक संरचना में जो स्थान रहा है उसे ही बिंदु मानकर परिवर्तन की भावी दिशा मात्रा व प्रकृति का मापन किया जाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। एक सामाजिक प्राणी के रूप में उसकी ढेर सारी आवश्यकताएं मनुष्य ने अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए पैदा किया। इन आवश्यकताओं की पूर्ति मनुष्य को स्वयं करनी पड़ती है पर यह संभव नहीं हो पाया कि वह हर प्रकार की आवश्यकताएँ स्वयं पूरा कर ले। इसलिए उसे एक दूसरे के साथ पारस्परिक सहयोग करना पड़ा। इसमें भाषा, रीति रिवाज, प्रथा, परंपराएं विकसित हुई और इसी से मनुष्य की जीवन शैली, जीवन जीने के ढंग विकसित हुआ यही उसकी संस्कृति है। इसके दो पक्ष हैं, जिसे भौतिक तथा अभौतिक संस्कृति कहा जाता है। भौतिक संस्कृति के अंतर्गत प्रयुक्त भौतिक संसाधन, उपकरण, पदार्थ आदि सम्मिलित है तो दूसरी अभोतिक के अंतर्गत रीति रिवाज, प्रथा, परंपरा ओर रुढि.या हद सम्मिलित है।

**मुसहर जातियों का आवास–** आवास मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है, यद्यपि यह एक सार्वभौमिक आवश्यकता है, परंतु आवास व्यवस्था का स्वरूप सार्वभोमिक रूप से सामान्य नहीं है। भिन्न–भिन्न समाजों में भी आवास व्यवस्था में पर्याप्त भिन्नता दिखाई देती है। मकान, एक चौड़ी सड़क के दोनों ओर सीधी कतार में होते हैं, लेकिन मुसहर जाति इससे भिन्न बेतरतीय बनाए जाते हैं, कहीं दो, तो कहीं चार मकान एक साथ बने दिखाई देते हैं। मकान न तो कतारबद्ध होते हैं न ही परस्पर सटे हुए, प्रायः दूर–दूर होते हें। उसमें आज भी ज्यादा मकान झोपड़ी, टीन सेड ओर कच्चे मकान सम्मिलित है। सरकार के सारे व्यवस्था के बावजूद पक्के मकान नसीब नहीं है। दूसरे मुशहर घास फूस, बाँस, लकड़ी ओर गारा मिट्टी की टटिया दीवारों से बनी झोपडि.याँ बनाकर रहते हैं। कहीं–कहीं मिट्टी की चौड़ी 06 फीट ऊंची दीवारें उठाकर उस पर फर्सियों की छत डाल दी जाती है। जो एक परिवार के लिए ओसत लंबाई चौड़ाई 12, 15 फीट होती है। उनके घर चाहे घास फूस का हो या मिट्टी ईट ओर पत्थर का एक बड़ा कमरा होता है, इसमें रसोई घर सोने–बैठने की जगह के साथ जीवन उपयोगी सभी चीज मौजूद होती है।

**गोत्र–** मुसहर जाति अनेक गोत्रों में बँटा होता है, एक गोत्र के लोग कुटुंबगोती, संगोति या भाईबंदी कहलाते हैं। मुसहर जाति अपनी गोत्र की गौरव बचाने के लिए अपने गोत्र का नाम ले के कसम खाते हैं। के0एस0 सिंह ने अपनी पुस्तक 'इंडियन कम्युनिटीज' में बताया है कि, मुसहरों में प्रचलित गोत्र–सूर्या, काशी, कश्यप, शबरी है। मुसहर समुदाय में संगोत्री विवाह वर्जित हे।

**विवाह–** प्रत्येक समाज में परिवार बसाने के लिए दो या दो से अधिक स्त्री पुरुष में आवश्यक संबंध स्थापित करने ओर उसे स्थिर रखने की कोई ना कोई संस्थात्मक व्यवस्था पाई जाती है जिसे विवाह कहते हैं। विवाह प्रत्येक समाज में चाहे वह आदिम हो अथवा सभ्य समाज की संस्कृति का एक आवश्यक अंग होता है। मुसहर समुदाय भी हिंदू रीति रिवाजों को अपनाते हैं। उनमें भी विवाह का उद्देश्य धर्म, प्रजा, रति है। ये लोग एक विवाह को मानते हैं तथा सजातीय विवाह का समर्थन करते है।

**शिक्षा–** किसी भी व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का बहुत महत्व होता है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति अपनी बातों को लोगों को समझा सकता है तथा दूसरे की बात को समझ सकता है। शिक्षा के द्वारा ही तर्कशीलता आती है ओर वह अंधविश्वासों, कुरीतियों इत्यादि के विरुद्ध आवाज उठा सकता है। परंतु मुसहर जाति में शिक्षा न के बराबर है। अध्ययन के दौरान यह देखने को मिला कि किसी परिवार के सभी बच्चे स्कूल जा रहे हैं, तो किसी–किसी में स्कूल जाने वालों की संख्या शून्य है।

**अस्पृश्यता–** अस्पृश्यता का सामान्य अर्थ छुआ–छूत है जो आज भी मुसहर जाति के साथ शत प्रतिशत पाया जाता है।

**आर्थिक स्थिति–** मनुष्य के रूप में उद्विकास के पश्चात सर्वप्रथम जिन आवश्यकताओं के साथ मनुष्य का सरोकार हुआ वे आवश्यकताएं वायु, जल ओर भूख ही रही होगी। यदि हम प्राचीन समाज के ऐतिहासिक विकास क्रम का अध्ययन करें तो हम पाते हैं कि आदिकालीन अर्थ व्यवस्था शिकार या आखेट पर आश्रित थी जो जंगलों तथा पहाड़ों में खाद्य संर्गह करना, नदियों तथा तालाबों से मछली पकड़ना इनकी आजीविका का प्रमुख साधन रहे हैं। मुसहर का सामाजिक–आर्थिक जीवन भौगोलिक पर्यावरण के साथ प्रत्यक्षतः संबंधित रहा है मुसहर जाति अपने जीवन को प्रकृति से लगातार संघर्ष करना पड़ता है। उदर की पूर्ति के लिए उन्हें कठोर परिश्रम करना पड़ता है। तथा ये लोग आज भी पर्यावरण के साथ संतुलन बनाए रखने का भरसक प्रयास किए है।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

**व्यवसाय–** शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति में व्यवसाय का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि इसका सीधा संबंध धन से जुड़ा हुआ है ओर धन से ही भौतिक आवश्यकताओं (रोटी, कपड़ा, मकान) को मुख्यतया प्राप्त किया जा सकता है जहाँ तक मुसहरों में वर्तमान में व्यवसाय का सवाल है, तो ये लगभग पूर्णतया मजदूरी पर आश्रित है ओर यह अपने परंपरागत व्यवसाय (पत्तों के बर्तन बनाना) को पूर्णतया नहीं छोड़े हैं।

**आय–** मुसहर जाति जीवन निर्वाह के लिए कृषि मजदूरी तथा थोड़ी बहुत मात्रा में अन्य साधनों पर निर्भर करते हैं। इस जाति में एकाकी परिवार का प्रचलन देखा गया है। परिवार के लोग अलग–अलग कार्य करते हैं। मजदूरी या अन्य कोई कार्य जैसे मछली पकड़ना, व्यापार, उद्योग – धंधा तथा शिल्प के माध्यम से आय अर्जित करते हैं। इनका मासिक आय पांच हजार तथा उससे कुछ ज्यादा है। जिससे ये लोग अपने जीवन को अच्छी तरह से नहीं चला पाते हैं।

**मुसहर जाति का धार्मिक विश्वास–** मानव जीवन में धर्म का महत्वपूर्ण स्थान है चाहे आदिम समाज रहा हो अथवा आधुनिक समाज सभी में धर्म संस्कृति के आवश्यक अंग के रूप में कार्य करता है लेकिन जैसे– जैसे आधुनिकीकरण का प्रभाव समाज पर पड़ रहा है धर्म का महत्व कम हो रहा है। लेकिन यह सत्य है कि धर्म के बिना कोई मनुष्य जिंदा नहीं रह सकता। धर्म का प्रभाव व्यक्ति के जीवन के साथ उनके सामाजिक आर्थिक राजनीतिक व सांस्कृतिक जीवन निर्देशित होता है।

प्राचीन काल से ही मुसहर जाति जिन–जिन सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन में वैवाहिक निषेध, धार्मिक क्रियाएं, खान–पान, सामाजिक सहवास नियंत्रण एवं सामंत प्रमुख संस्कार आदि है, से संबंधित थे। आज जातीय मान्यताओं, रूढ़ियों, कुप्रथाओं तथा वाह्य आडंबरों से मुक्त होते जा रहे हैं। अर्थात सामाजिक संरचना के अनवरत परिवर्तन की प्रक्रियाओं ने सामाजिक संस्थाओं एवं वैचारिक को इस सीमा तक उद्वेलित किया है। मुसहर जाति परंपरागत रूप से वेदाअध्ययन एवं धार्मिक ग्रंथो से वंचित थे। अतः उनके लिए इन ग्रन्थों की प्रविधि का प्रश्न ही नहीं उठता, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि आज उपलब्धता परंपरागत निर्योग्यताओं पर प्रभावित ओर आज भी यह जाति अपनी निर्योग्यताओं के कारण धार्मिक जीवन के नाम पर 'रामायण' 'महाभारत' शब्द जानती है। लेकिन इनसे पूछा जाए कि इस ग्रंथ में किसके बारे में लिखा गया है तो नहीं बता पाते। इसका मुख्य कारण है उनकी गरीबी और अशिक्षा। मुसहर समुदाय परंपरागत रूप से मंदिरों में प्रवेश से वंचित था लेकिन अब यह लोग मंदिरों में जाकर स्वतंत्र रूप से दर्शन करते हैं, ये लोग ग्रामीण क्षेत्र में बनाए गए मंदिर डीह बाबा ओर काली जी की पूजा करते हैं लेकिन मुसहर जाति के लोगों का भूत–प्रेत एवं जादू–टोना में बहुत ही गहरा विश्वास है। ये लोग जादू–टोना को धर्म मानते हैं। ओर जादू–टोना करने वाले लोगों को ये लोग ओझा या सोखा के नाम से पुकारते हैं। अगर इनके यहां कोई बीमार होता है तो ये लोग अस्पताल बाद में जाते हैं पहले ओझाओं के पास जाते है, इसका मुख्य कारण इनकी गरीबी को दर्शाती है।

**स्वतंत्र भारत के बाद परिवर्तन–** भारत स्वतंत्र होने के बाद भारत का आधुनिककरण की पहली स्तंभ थी पंचवर्षीय योजनाएं। समाजवादी आयोजन नियोजन द्वारा गतिशीलता को महत्व दिया गया, उम्मीदों का दायरा बढ़ा, ओद्योगिकरण, नगरीकरण, मशीनीकरण बढ़ा, व्यक्ति की भूमिकाएं स्वयं संरचनात्मक दृष्टि से परिवर्तित हो गई। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में रेडियो, चलचित्रों आदि प्रभावी संचार साधनों द्वारा परिवर्तन केंद्रीय मानकर आधुनिकरण की संज्ञा से दर्शाया है। भावना, निष्ठा ही राजनैतिक सहभागिता का प्रथम सोपान है। स्वतंत्रता के बाद समाजवाद, आयोजन एवं आधुनिकीकरण, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विचारधाराओं पर हावी होकर प्रथागत परंपरा जो सतह पर विषय ओर पतनशील थी, गतिशीलता का राजनैतिक प्रक्ष प्रदान किया। ओद्योगीकरण के फलस्वरुप नवीन प्रतिष्ठानों, व्यापारिक केन्द्रों का निर्माण शुरू हुआ। 1951 से 2011 तक के जनगणना के बीच ओद्योगिक केन्द्रों में विशेष वृद्धि हुई। 65 प्रतिशत संपत्ति का केंद्रीकरण इन्हें केन्द्रों तक सीमित होकर नगरीकरण की प्रक्रिया को तीव्रता प्रदान की। 35 प्रतिशत ग्रामीण अंचल इससे अछूत ना रहा, लेकिन सामान्य नागरिक की तुलना में इनका शहरीकरण सीमांत ही है। इसी कारण गांवों के मजदूर वर्ग गांव से भागकर शहर की तरफ आ रहे हैं, क्योंकि इन जातियों को गांव पर कोई काम नहीं मिलता है। जिससे इनके परिवार के स्वरूप में परिवर्तन दिख रहा है। संयुक्त परिवार से लोग एकाकी परिवार की तरफ बढ़ रहे हैं। जबकि अब यदा–कदा कतिपय राजनीतिक दल खेतिहर मजदूरों के संगठन बनाते रहे हैं जो जमींदारी प्रथा और बड़े जमींदारों के विरुद्ध संघर्षरत रहे। इस प्रकार हम देखते हैं कि राजनैतिक संस्थाओं ने स्वतंत्रता के पूर्व से लेकर वर्तमान काल तक इनके निर्योग्यताओं को समाप्त करने के लिए विशेष कार्य किया और इस समय भी सरकार द्वारा राजनैतिक क्षेत्र में ही बड़े पैमाने पर इनको हर तरह की सहायता प्रदान की जा रही है, चाहे वह राजनैतिक हो या शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि मनोवृतियों को बढ़ावा दिया जा रहा है। उपर्युक्त कथनों से स्पष्ट होता है कि मुसहर जातियों में राजनैतिक झुकाव हुआ है और यह जातियां भी संगठित हो रही है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारत स्वतंत्र होने के बाद भी मुसहर जाति की सामाजिक, आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार नहीं हुआ है। इन लोगों के साथ आज भी समाज के लोग वंचित अछूत जैसा व्यवहार करते हैं। इनकी आर्थिक स्थिति शुदृढ़ नहीं है, न ही ये लोग शिक्षित हैं। ये लोग जादू–टोना को धर्म मानते हैं क्योंकि शिक्षा की कमी ओर निर्धनता के कारण इसे धर्म मानते हैं। स्वतंत्र भारत में इन्हें वोट देने का अधिकार तो मिल गया लेकिन संगठित रूप से रहने के लिए कोई निश्चित जगह नहीं मिल पायी है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह, शैलेंद्रः 'चूहे खा कर जीने को मजबूर वन राजा' सरस सलील, दिल्ली प्रकाशन, 2008.
2. ठाकुर, हरिनारायणः 'दलित साहित्य का समाजशास्त्र' भारतीय ज्ञानपीठ रोड, नई दिल्ली, 2009.
3. अंबेडकर, सुनील, दर्द शोषित समाज का, अंबेडकर प्रेस, इटावा 20001.
4. अरुण कुमारः संस्कृति, विकास एवं स्वांग की सांस्कृतिक राजधानीः बिहार में मुसहर समुदाय, आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक जर्नल लेख, 20061.
5. पादेय, वन्दन : मुसहर जाति एक समाजशास्त्री अध्ययन, 20131.
6. रक्षिता सिंह एवं पंकज सिंहः उत्तर प्रदेश में मुसहरः समकालीन भारत में अपनी पहचान तलाशती एक जाति, जर्नल ऑफ सोशल इन्क्लूजन स्टडीज, 20231.
7. कुमार संजयः 'मध्यवर्ग और मुसहर जाति', समाचार पत्र, हिंदुस्तान, 20001.
8. डॉ0 आलोक कुमार कश्यप और हरिओम मिश्रः 'मुसहर जातियों की सामाजिक एवं आर्थिक दशा', आर्या पब्लिकेशन दिल्ली, 201.

*****